समाजीकरण के सिद्धान्त
(सी॰ एच॰ कूले के सिद्धान्त)
Theories of socialization (Theory of C.H Cooley)

सी॰ एच॰ कूले ने समाजीकरण की प्रक्रिया को अपने 'आत्म-दर्पण का सिद्धान्त' (Theory of looking Glass self) के आधार पर समझाने का प्रयत्न किया है। इसकी विस्तृत व्याख्या इन्होंने अपनी पुस्तक 'ह्यूमन नेचर एण्ड द सोशल ऑर्डर (Human Nature and the social order) में 1902 में की है। इनका यह सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्र का मूल विषय है जो प्रतिमात्मक अन्तःक्रियावाद पर आधारित है। व्यक्ति में आत्म या स्व (self) का विकास ही समाजीकरण की आधारशिला है। इस स्व का विकास समाज के साथ अन्तःक्रिया के साथ होता है। इन्होंने लिखा है कि व्यक्ति और समाज अभिन्न घटनाएँ हैं। यह एक ही वस्तु का साधारण रूप से सामूहिक और विभाजित रूप है। अर्थात व्यक्ति व समाज दोनों जुड़वा है। दोनों के बीच अटूट संबंध है। ये एक ही वस्तु के सामूहिक और पृथक्कीकृत पक्ष है।

कूले ने व्यक्तित्व के विकास में प्राथमिक समूहों तथा सामाजिक अन्तःक्रिया विशेषतः सम्प्रेषण की महत्ता पर बल दिया है। साथ ही इन्होंने इस सिद्धान्त में कल्पना को महत्वपूर्ण माना है जो उनके 'सामान्य निरीक्षण' तथा अपने बच्चों के अध्ययन पर आधारित है।

कूले ने समाजीकरण के सिद्धान्त का मूल आधार व्यक्ति का आत्म बताया है। 'आत्म' का अभिप्राय व्यक्ति 'मानव स्वभाव' (Human Nature) से माना गया है। 'आत्म' का मुख्य संबंध व्यक्ति की

अपनी भावनाओं से होता है। व्यक्ति की भावनाओं का विकास समाज के साथ अन्तःक्रिया के फलस्वरूप होता है। 'आत्म' कोई पृथक धारणा नहीं है, यह दूसरों के सम्पर्क में जन्म लेता है। 'तू' की भावना बिना 'मैं' का भाव नहीं आ सकता। अपने संबंध में इसी मानसिक दर्पण को कूले ने 'आत्म दर्पण' कहा है। उनके अनुसार 'आत्म या स्व परावर्तित' होता है। समाज के साथ इसका स्वरूप निखरता है।

कूले का आत्म दर्पण का सिद्धान्त इस व्याख्या से जुड़ा है कि समाज व्यक्ति का आईना है जिसमें व्यक्ति अपने 'स्व' को देखता है व्यक्ति को अपने स्व की अनुभूति सामाजिक अन्तःक्रिया के क्रम में होती है। स्व और समाज में पारस्परिक सम्बन्ध है। अपने बारे में चेतन होने का अर्थ है, समाज के बारे में चेतन होना, जिसे सामाजिक चेतना कहा गया है। यह सामाजिक चेतना स्व चेतना से अलग नहीं है। स्व का आगमन समाज के साथ अन्तःक्रिया के फलस्वरूप होता है। समाज एवं स्व की चेतनाएँ मानव मन में केन्द्रित हैं, जिसका अभ्यास कल्पना के माध्यम से होता है। इसलिए कूले का कहना है कि व्यक्ति जो परस्पर कल्पना करते हैं, वे ही समाज के वास्तविक तथ्य हैं जिन्हें सामाजिक तथ्य (Social facts) कहा गया है।

कूले के अनुसार व्यक्ति की कल्पना करने की प्रवृत्ति की व्याख्या 'स्व' की उत्पत्ति पर प्रकाश डालकर की जा सकती है। व्यक्ति में जैसे ही 'मैं' की भावना का विकास होता है वैसे ही दूसरों के प्रति चेतना का विकास होता है। इसकी अभिव्यक्ति तुम, वह, वे, वह लड़की, वह

स्त्री, वह लड़का आदि के रूप में होती है। स्व व्यैक्तिक नहीं होता बल्कि सामाजिक वातावरण की उपज होता है। स्व के संबंध में व्यक्ति की धारणा उसके चारों ओर के लोगों से प्रभावित होती है। अर्थात् समाज के दूसरे लोगों की नजर में व्यक्ति अपने को देखता है। दूसरे व्यक्तियों के भाव, विचार, निर्णय आदि व्यक्ति का आइना है जिसमें व्यक्ति अपने स्व का दर्शन करता है। जिस प्रकार हम अपने चेहरे और पहनावा को आईने में देखकर मन के अनुकूल होने पर प्रसन्न व अनुकूल न होने पर अप्रसन्न होते हैं; उसी प्रकार कल्पना के माध्यम से दूसरों के मन में अपनी बाह्य आकृति, आदतों, कार्यों उद्देश्यों एवं आचरणों आदि चीजों को देखते हैं और फिर अपने बारे में एक धारणा विकसित करते हैं।

कूले के अनुसार सामाजिक अन्तःक्रिया 'मनों का मिलन' है। व्यक्ति में 'स्व' का विकास तीन स्तरों के माध्यम से होता है। इस संदर्भ में कूले ने लिखा है "दूसरों की दृष्टि में अपनी आकृति की कल्पना, उस आकृति के संबंध में दूसरों के निर्णय की कल्पना और अपने प्रति किसी प्रकार के 'गर्व' या 'अवमानना' की स्थिति या अनुभूति।

कूले का 'आत्म दर्पण' (Looking Glass) तीन स्तरों के माध्यम से व्यक्ति के समाजीकरण में सहायक होता है। ये इस प्रकार हैं

(1) दूसरों की दृष्टि में अपनी आकृति की कल्पना (The Imagination of our Appearance to the other person):—

इस प्रथम स्तर में व्यक्ति यह कल्पना करता है कि दूसरे लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं। दूसरों के हाव-भाव-व्यवहार, कथन आदि व्यक्ति के दर्पण होते हैं जिसमें अपनी आकृति को देखता है।

(2) उस आकृति के संबंध में दूसरों के निर्णय की कल्पना (The Imagination of his Judgement of the Appearance):—

इस दूसरे स्तर पर व्यक्ति अपनी आकृति के संबंध में दूसरों के निर्णयों के बारे में कल्पना करता है। इसी के आधार पर अपने बारे में एक निश्चित धारणा को विकसित करता है।

(3) अपने प्रति गर्व या अपमानना की अनुभूति (some sort of self-feeling, such as pride and mortification):—

इस तीसरे और अन्तिम स्तर पर व्यक्ति दूसरों के निर्णय के आधार पर जो धारणायें विकसित करता है उसके परिणामस्वरूप उसके अन्दर गर्व या ग्लानि विकसित होती है। यदि व्यक्ति अपने बारे में दूसरों के विचार, कथन और निर्णय को अनुकूल पाता है, तब उसमें गर्व की भावना का विकास होता है। यह 'गर्व' या 'ग्लानि' समाजीकरण में सहायक होता है।

कूले ने इस बात का उल्लेख किया है कि 'आत्म दर्पण' व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन के सामान्य जीवन को प्रभावित करता है, लेकिन इसका प्रभाव बचपन के दिनों में विशेष रहता है। बचपन के दिनों में इस प्रकार के समाजीकरण की प्रक्रिया का क्षेत्र प्राथमिक समूह होता है। इसलिए कूले ने व्यक्तित्व की उत्पत्ति एवं विकास में प्राथमिक समूहों की भूमिका पर बल दिया है।